हिन्दी–10

(पाठ्यक्रम 'अ')

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र के उत्तर

खंड 'क': अपठित बोध

1. (क) दुख–वर्ग में भय तथा आनंद–वर्ग में उत्साह का स्थान है।

(ख) उत्साह में कष्ट या हानि सहन करने की दृढ़ता के साथ–साथ कर्म में प्रवृत्त होने के आनंद का योग रहता है।

(ग) साहित्यिक मीमांसकों ने उत्साह के युद्ध–वीर, दान–वीर इत्यादि भेद किए हैं।

(घ) साहस को उत्साह के अंतर्गत तभी लिया जा सकता है, जब साहसी धीर उस काम को आनंद के साथ करता चला जाए जिसके कारण उसे कई प्रहार सहने पड़े हों।

(ङ) आनंद–प्रयत्न या उसकी उत्कंठा में ही उत्साह के दर्शन होते हैं।

(च) शीर्षक– 'उत्साह का स्वरूप'

खंड 'ख': व्यावहारिक व्याकरण

2. (क) सूरज निकला और अँधेरा दूर हो गया।

(ख) कठिन परिश्रम के कारण ही आप उत्तीर्ण हो गए।

(ग) विशेषण उपवाक्य

(घ) संयुक्त वाक्य

3. (क) श्रेया के द्वारा मधुर गीत गाया गया।

(ख) हमसे चला नहीं जाता।

(ग) रीमा ने चित्र बनाया।

(घ) अपराधी को सज़ा हो गई।

4. (क) एवरेस्ट – संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'है' क्रिया का कर्ता

(ख) वह – सर्वनाम, पुरुषवाचक, अन्य पुरुष, एकवचन, कर्ता कारक, पुल्लिंग, 'सो जाता है' क्रिया का कर्ता

(ग) साइकिल से – संज्ञा, जातिवाचक, एकवचन, स्त्रीलिंग, करण कारक

(घ) शाबाश! – अव्यय, विस्मयादिबोधक, हर्षसूचक

5. (क) इहाँ उहाँ दुह बालक देखा। मति भ्रम मोरि कि आन बिसेखा।
देखि राम जननी अकलानी। प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी।।
देखरावा मातहि निज, अद्‌भुत रूप अखंड।
रोम-रोम प्रति लागे, कोटि-कोटि ब्रह्मंड।

(ख) वीर रस

(ग) क्रोध

(घ) करुण रस

खंड 'ग' : पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक

6. (क) कैप्टन को नेताजी सुभाषचंद्र बोस की चश्मारहित मूर्ति देखकर दुख होता था। चश्मे के बिना उसे नेताजी का व्यक्तित्व अधूरा प्रतीत होता था। नेताजी हमेशा चश्मे का प्रयोग करते थे। कैप्टन नेताजी के प्रति आदर-सत्कार व्यक्त करने के लिए मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

(ख) कैप्टन द्‌वारा मूर्ति पर लगाया गया चश्मा यदि ग्राहक को पसंद आ जाता था, तो वह वही उतारकर उन्हें दे देता था। नेताजी की चश्मारहित मूर्ति कैप्टन को आहत करती थी, तो वह मूर्ति पर नया चश्मा लगा देता था। इस प्रकार वह बार-बार चश्मा बदल दिया करता था।

(ग) कैप्टन में देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। वह देश के प्रति त्याग करने वालों का सम्मान करता था। वह एक साधारण आदमी था, जो फौज में नहीं जा सकता था लेकिन वह नेताजी की बिना चश्मेवाली मूर्ति पर चश्मा लगाकर देशभक्ति प्रकट करता था। कैप्टन के चरित्र से हमें देशभक्ति की प्रेरणा मिलती है।

7. (क) बालगोबिन भगत गृहस्थ थे। वे अपने गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए सच्चे साधुओं जैसा आचार-विचार रखते थे और व्यवहार करते थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे, किसी से झगड़ा नहीं करते थे और सदा खरा व्यवहार करते थे। वे बिना पूछे दूसरों की वस्तुओं का प्रयोग भी नहीं करते थे, इसलिए लेखक उन्हें गृहस्थ साधु मानता है।

(ख) लेखक को सेकंड क्लास के डिब्बे में आया हुआ देखकर नवाब साहब के चेहरे पर असंतोष का भाव छा गया। उन्हें एकांतवास में बाधा का अनुभव होने लगा। नवाब साहब द्‌वारा लेखक से बातचीत की उत्सुकता न दिखाने पर लेखक ने भी आत्मसम्मान में उनसे आँखें चुरा लीं।

(ग) फ़ादर मानवीय गुणों से परिपूर्ण थे। उनमें मानव के प्रति कल्याण की भावना थी। उनमें अपनत्व, ममत्व, करुणा, प्रेम, वात्सल्य तथा सहृदयता थी। वे इतने सहृदय थे कि एक बार समीप आकर सदैव समीप बने रहते थे। वर्षा में बादलों की गड़गड़ाहट या बिजली की चमक, गरमी की तपन और सरदी की सिकुड़न उन्हें प्रियजन से मिलने से रोक नहीं पाती थी। इसी प्रकार प्रियजनों को संकट के समय ऐसी सांत्वना देते थे कि वे अपने दुख ही भूल जाते थे।

(घ) घर में लेखिका के व्यक्तित्व का सकारात्मक विकास उस समय शुरू हआ जब उसकी बड़ी बहनों का विवाह हो गया और भाई घर से बाहर अर्थात कोलकाता पढ़ाई करने चले गए। अब पिता जी ने उसके व्यक्तित्व पर ध्यान देना शुरू किया। वे उसे रसोई में न भेजकर उन बैठकों में उठने-बैठने के लिए प्रोत्साहित करते, जहाँ राजनीतिक गतिविधियों पर चर्चाएँ हाती थीं।

(ङ) शहनाई का उल्लेख वैदिक ग्रंथों में तो नहीं मिलता है किंतु इसे संगीत के शास्त्रांतर्गत 'सुषिर-वाद्यों' में गिना जाता है। अरब में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य को 'नय' कहते हैं, जिसमें नरकट का प्रयोग होता है। शहनाई को 'शाहेनय' अर्थात 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि दी गई है। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तानसेन के द्वारा रची बंदिश जो संगीत राग कल्पद्रुम से प्राप्त होती है। उसमें शहनाई, मुरली, वंशी, शृंगी एवं मृदंग आदि का वर्णन आया है।

8. (क) गोपियाँ श्रीकृष्ण से प्रेम करती थीं। कृष्ण के मथुरा चले जाने से उन्हें विरह-वेदना झेलनी पड़ रही थी। इसी विरह-वेदना को वे श्रीकृष्ण से मिलकर सुनाना चाहती थीं। अब वे श्रीकृष्ण को अपनी विरह-वेदना कैसे सुनाएँ? यह बात उनके मन में ही रह गई।

(ख) जब गोपियों को पता चला कि श्रीकृष्ण ने स्वयं आने के स्थान पर उद्धव द्वारा खुद को गोपियों से दूर करने वाला योग-संदेश भेज दिया है, तो गोपियों की पीड़ा और अधिक बढ़ गई।

(ग) गोपियों को विश्वास था कि श्रीकृष्ण हमेशा के लिए नहीं गए हैं। वे जल्द ही लौटकर आ जाएँगे। वे मन में इसी आशा को लेकर दुख सहकर भी जी रही थीं।

9. (क) इस प्रसंग में लक्ष्मण ने परशुराम का घोर विरोध किया है लेकिन अधिकतर व्यंग्य के अंदाज में। इससे प्रतीत होता है कि लक्ष्मण स्वभाव से बहुत ही उग्र हैं। वहीं दूसरी ओर, राम ने शांत मुद्रा में इस वार्तालाप को होते हुए देखा है। इससे प्रतीत होता है कि राम स्वभाव से बहुत ही शांत हैं। लक्ष्मण क्रोध का जवाब क्रोध से देते हैं, वहीं पर राम क्रोध का जवाब भी मंद मुसकान से देते हैं।

(ख) किसी भी कार्य को करने के लिए उत्साह की आवश्यकता होती है। कवि भी समाज में नई परंपरा की स्थापना के लिए नई पीढ़ी में उत्साह जगाना चाहते हैं। इस कविता में बादल के माध्यम से नई युवा पीढ़ी का आह्वान किया गया है। इस कविता का उद्देश्य युवाओं में जोश, ऊर्जा, उत्साह भरपूर मात्रा में भरना है क्योंकि इनके बिना समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का अंत नहीं हो सकता।

(ग) 'अट नहीं रही' कविता में प्राकृतिक उपादानों का चित्रण एवं मानवीकरण हुआ है। काव्य के दोनों पक्ष–भाव पक्ष और शिल्प पक्ष सराहनीय हैं। छायावाद की अन्य विशेषताएँ; जैसे-गेयताछाया, प्रवाहमयता, अलंकार योजना आदि भी देखने को मिलती हैं। भाषा जहाँ एक और संस्कृतनिष्ठ, सामासिक और आलंकारिक है, तो वहीं दूसरी ओर ठेठ ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी दर्शनीय हैं। भाषा सरल, सहज और प्रवाहमयी है।

(घ) 'कन्यादान' कविता में माँ द्वारा अपनी बेटी को जो सीख दी गई है, वह उसके अनुभव की उपज है। माँ को दुनियादारी और ससुरालवालों द्वारा किए गए व्यवहार का अनुभव है। उन्हें ध्यान में रखकर भावी जीवन के लिए सीख देती है। आज जब समाज में छल-कपट, शोषण, दहेज प्रथा आदि बुराइयाँ बढ़ी हैं तथा ससुराल में अधिक सजग रहने की ज़रूरत बढ़ गई है तब माँ द्वारा बेटी को दी गई सीख की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

(ङ) यह दुनिया किसी फ्रेम में लगे चित्र का चमकीला और रंगीन दृश्य ही देख पाती है। मंच पर गाते और नृत्य करते कलाकार तो सभी को दिखाई देते हैं और इसलिए उनकी प्रतिभा की पहचान सभी को हो जाती है। लोग उनके लिए वाह-वाह करते हैं, तालियाँ बजाते हैं, उन्हें पुरस्कार देते हैं पर उनके कार्यक्रम तैयार करने वाले, उनके लिए गीत लिखने वाले, उनके संगतकार मंच के अँधेरे में ही छिपे रहते हैं। इसीलिए अति प्रतिभावान संगतकार भी लोगों की भीड़ के सामने न आ पाने के कारण मुख्य या शीर्ष स्थान पर नहीं पहुँच पाते।

10. (क) 'माता का अँचल' पाठ में वर्णित भोलानाथ के पिता की दिनचर्या के बारे में यह पता चलता है कि वे सुबह जल्दी उठते और नहा-धोकर पूजा-पाठ करने बैठ जाते थे। वे प्रतिदिन रामायण का पाठ करते थे। पूजा के समय वे अपने पुत्र भोलानाथ को भभूत से तिलक लगा देते थे। पूजा-पाठ के उपरांत वे रामनामी बही पर एक हज़ार बार राम-राम लिखते थे और अपनी पाठ करने की पोथी में रख लेते थे। इसके उपरांत वे पाँच सौ बार कागज़ के टुकड़े पर राम-राम लिखते और उन्हीं कागज़ों पर आटे की छोटी-छोटी गोलियाँ रखकर लपेटते। उन गोलियों को लेकर वे गंगा जी के तट पर जाते और अपने हाथों से मछलियों को खिला देते थे। इस समय भी भोलानाथ उनके साथ ही होता था।

(ख) इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ब्रिटिश सरकार का भारत में सम्मान को प्रदर्शित करता है। इस पंक्ति में ब्रिटिश सरकार पर व्यंग्य किया गया है। इसमें एलिज़ाबेथ एवं प्रिंस फ़िलिप के आने पर चालीस कोरड़ भारतीयों में किसी की ज़िदा नाक काटकर जॉर्ज पंचम की लाट में लगा देने की अपमानजनक बात सोचना और करना शामिल है। यदि सच में दिल्ली के पास नाक होती तो इतना बखेडा खड़ा न करके सीधे जॉर्ज पंचम के लाट को ही हटवा दिया होता। इसका एक अर्थ यह होता कि भारत में अपना शासन खो चुके अंग्रेज़ों के प्रति लोगों के मन में अब कोई मान-सम्मान नहीं बचा था और साथ दी इससे हमारे प्रशासन की कमज़ोर एवं त्रुटिपूर्ण व्यवस्था का भी पता चलता है।

(ग) यूमथांग शहर के आसपास किसी पवित्र स्थान पर दो तरह की पताकाएँ लगाई जाती हैं– एक शांति और अहिंसा की प्रतीक मंत्र लिखी श्वेत पताकाएँ तथा दूसरी शुभ कार्य की रंगीन पताकाएँ। यहाँ मान्यता के अनुसार, किसी बौद्ध धर्म के अनुयायी की मृत्यु होने पर उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी पवित्र स्थान पर 108 श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। इसी प्रकार, नए कार्य की शुरुआत में रंगीन पताकाएँ लगाई जाती हैं। इन पताकाओं को उतारा नहीं जाता है। ये धीरे-धीरे अपने-आप नष्ट हो जाती हैं।

खंड 'घ': लेखन

11. (क) बाल-मज़दूरी

बाल-मज़दूरी क्या है? – बाल मज़दूरी बच्चों से लिया जाने वाला काम है, जो किसी भी क्षेत्र में उनके मालिकों द्वारा करवाया जाता है। यह एक दबावपूर्ण व्यवहार है, जो अभिभावकों या मालिकों द्वारा किया जाता है। बचपन सभी बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है, जो माता-पिता के प्यार और देखरेख में सभी को मिलना चाहिए। यह गैर-कानूनी कृत्य बच्चों को बड़ों की तरह जीवन जीने पर मजबूर करता है। बच्चे प्रकृति की बनाई एक प्यारी रचना है लेकिन यह बिलकुल भी सही नहीं है कि कुछ बुरी परिस्थितियों की वजह से बिना सही उम्र में पहुँचे उन्हें इतना कठिन परिश्रम करना पड़े।

कारण – भयंकर गरीबी और खराब स्कूली मौकों के कारण बहुत सारे विकासशील देशों में बाल-मज़दूरी बेहद आम बात है। बच्चे अपनी उम्र से अधिक कठिन श्रम जिन कारणों से करते हैं, उनमें पहला है– गरीबी। इसके अतिरिक्त जनसंख्या विस्फोट, सस्ता श्रम, उपलब्ध कानूनों का लागू नहीं होना, बच्चों को स्कूल भेजने के स्थान पर काम पर भेजने के इच्छुक माता-पिता ताकि परिवार की आय बढ़े जैसे अन्य कारण शामिल हैं।

दुष्परिणाम – बाल-श्रम का सबसे ज़्यादा असर बच्चों के विकास पर होता है। बाल-मज़दूरी से बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। गरीबी के कारण बच्चे बाल-मज़दूरी करने को मजबूर हो जाते हैं और उनके जीवन में शिक्षा का अभाव बना रहता है। कारखाने, कोयले की खदानें, पटाखों की फैक्टरी आदि में कार्य करने से बाल मज़दूरों की जान को ज़्यादा खतरा रहता है।

रोकने के उपाय – बाल-मज़दूरी रोकने के लिए सबसे पहले गरीबी को कम करना पड़ेगा क्योंकि गरीबी बाल-मज़दूरी का मुख्य कारण है। इसे रोकने के लिए शिक्षा का प्रसार-प्रचार बहुत आवश्यक है। इससे लोग बाल-श्रम के प्रति जागरूक होंगे। साथ ही बेरोज़गारी पर लगाम लगाना भी आवश्यक है। बाल-मज़दूरी रोकने का एक और उपाय है सख्त कानून, जिससे सस्ती मज़दूरी के चक्कर में बच्चों से काम करवाने वालों को कड़ी सज़ा मिल सके।

उपसंहार – बाल-मज़दूरी एक वैश्विक समस्या है, जो विकासशील देशों में बहुत सामान्य है। माता-पिता या गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोग अपने बच्चों की शिक्षा का खर्च वहन नहीं कर पाते हैं और जीवनयापन के लिए भी भेजना समय की बरबादी है। बाल-मज़दूरी के बुरे प्रभावों से सभी को अवगत कराना आवश्यक है। इसे जड़ से मिटाने के लिए सरकार को कड़े नियम-कानून बनाने चाहिए।

12. परीक्षा भवन

क. ख. ग. विद्यालय, नई दिल्ली

8 अगस्त, 20XX

प्रधानाचार्य

क. ख. ग. विद्यालय, नई दिल्ली

विषय: विज्ञान प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाने के संबंध में

महोदय

सविनय निवेदन है कि मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मेरी विज्ञान में बहुत रुचि है। मैं विद्यालय की प्रयोगशाला में कुशल परीक्षण प्राप्त करना चाहती हूँ। परंतु प्रयोगशाला में हमें न तो अधिक समय रहने दिया जाता है और न ही पर्याप्त उपकरण और साधन हैं, जिनके आधार पर मैं कुछ प्रयोग कर सकूँ और विज्ञान विषय में निपुणता पा सकूँ।

अत: आपसे प्रार्थना है कि हमारी प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाएँ और उत्सुक छात्र-छात्राओं को उचित प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद

आपकी आज्ञाकारी शिष्या

निधि वर्मा

कक्षा - दसवीं 'अ'

अनुक्रमांक - 11

13.

“कपड़ों का रखे खयाल, दे सफ़ेदी बेमिसाल”

क्लीन वॉश साबुन

अब 250 ग्राम
सिर्फ़ 10
रुपये में

दाम भी आपके बजट में, आज ही इस्तेमाल करके देखें